ShodhVarta
An International Peer-Reviewed Journal
www.shodhvarta.in
Vol 02 Issue 03

The Voice of Freedom Struggle in Kannada Literature (1920-50)

Received: 13 June 2023
Reviewed: 23 June 2023
Accepted: 26 June 2023
Published: 30 June 2023
Paper ID: 230601

Dr. Maithili P. Rao
Professor
Department of Hindi, Jain University
Bengaluru, Karnataka
Email: mythili.rao@jainuniversity.ac.in

Abstract

The Kannada literature exhibits a profound impact of the freedom struggle. This research article delves into the discussion of Kannada literature and writers between 1920 to 1950. It highlights the literary expressions by writers during the freedom struggle, through which they conveyed their ideas. These writers influenced the Indian freedom movement through their literary consciousness. The objective of this study is to proclaim that during the era of the freedom struggle, Kannada literature emerged not only for political rebellion but also as a significant medium for language, literature, and literary freedom. This study will provide a comprehensive introduction that sheds light on the literary landscape of this era. The ongoing national movement influenced Kannada writers, and the main objective of the article is to explore how and to what extent it influenced them and present this fact.

Keywords – National General Assembly, National sentiment, colonial slavery, national rise, national rise, self-rule.

कन्नड साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के स्वर (1920 से 1950 तक)

सारांश (Abstract) –

कन्नड साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। इस शोध आलेख में 1920 से 1950 तक की समयावधि में कन्नड़ भाषा के साहित्य और लेखकों पर चर्चा की गई है। इसमें स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लेखकों द्वारा की गई साहित्यिक अभिव्यक्तियों का उल्लेख किया गया है, जिसके माध्यम से उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए। इन लेखकों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को साहित्यिक चेतना के माध्यम से प्रभावित किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह घोषित करना है कि स्वतंत्रता संग्राम के युग के दौरान, कन्नड़ साहित्य न केवल राजनीतिक विद्रोह के लिए उभरा, बल्कि भाषा, साहित्य और साहित्यिक स्वतंत्रता के लिए भी एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया। यह अध्ययन एक व्यापक परिचय प्रदान करेगा जो इस युग के साहित्यिक परिदृश्य पर प्रकाश डालता है। चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन ने कन्नड़ लेखकों को प्रभावित किया, और लेख का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि क्या और कैसे इसने उन्हें प्रभावित किया और इस तथ्य को प्रस्तुत करना है।

बीज शब्द (Keywords)-

राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्रीय भावना, औपनिवेशिक दासता, राष्ट्रोत्थान, राष्ट्रोत्थान, स्वराज्य।

प्रस्तावना – (Introduction)

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान साहित्यकार तथा साहित्य ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 19वीं शाताब्दी के मध्य से राष्ट्रीय चेतना के स्वर सशक्त रूप से मुखरित होने लगे। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से, विशेषत: महात्मा गांधी के आगमन के पश्चात, ने देश की राज्नीतिक गतिविधियों ने स्वाभाविक रूप से साहित्य तथा सहित्यकारों को प्रभावित किया। साहित्यकारों ने अपनी कहानियों, कविताओं, नाटकों, निबंधों आदि सभी साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्वतंत्रता संग्राम से जुडे संदेश को केंद्रीय भाव बनाया। प्राय:, औपनिवेशिक दासता से पीडित राष्ट्र के साहित्यकार होने की भावना ने उन्हें राष्ट्रीय नवजागरण के दायित्व के प्रति सजग किया था। जैसे-जैसे स्वतंत्रता सेनानियों की संख्या बढती गई, स्वतंत्रता के स्वर सशक्त होते चले गए, साहित्य ने जनता के इस आदर्शवादी चिंतन को प्रोत्साहित किया।

सन् 1915 में जब मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए तो भारतीय जनता में राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र गौरव एवं राष्ट्र सम्मान की भावना को जागृत करने में उत्प्रेरक के रूप में प्रस्तुत हुए। पहली बार जब उन्होंने पूरे देश की यात्रा की तो उनका उद्देश्य था अपने देश को, जनता को जानना तथा समझना। परंतु अपने भ्रमण से प्राप्त अनुभवों के सहारे उन्होंने देश को एकता के सूत्र में पिरोना का बीडा उठाया। उनकी लोकप्रियता के साथ स्वतंत्रता संग्राम का संदेश नगरों तक सीमित न रहते हुए ग्रामीण प्रदेशों में भी देशवासियों को उत्तेजित करने लगा था। स्वराज्य के संदेश को गांधीजी ने देश के कोने-कोने तक पहुंचाया।

8 मई, 1915 में गोपलकृष्ण गोखले जी की श्रद्धाँजलि सभा में उपस्थित रहने से लेकर 1934 की यात्रा तक महत्मा गांधी जी ने दक्षिण भारत के इस भूभाग की यात्रा 18 बार की। साथ ही 1924 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन जब बेलगांव में हुआ तो यह अपने आप में एक बहुत महत्वपूर्ण कदम था। इस संदर्भ को और भी अधिक महत्व तब प्राप्त हुआ जब गांधीजी ने इस अधिवेशन की अध्यक्षता की। स्वाभाविक है कि उस समय की युवा पीढी को उन्होंने अपने विचारों, अपनी जीवन शैली, अपने वक्तव्य से अत्यधिक प्रभावित किया होगा। उन युवाओं में अनेक साहित्यकार भी थे।

देश के अन्य भाषाओं के साहित्य की भांति गांधी जी के पदार्पण के पूर्व कन्नड के साहित्यकार भी मिथिकीय कहानियां, राजा-रानी की कहानियां, सामाजिक विषय तथा प्रेम आदि संबंधी साहित्य का सृजन कर रहे थे। राष्ट्र को कमजोर बनाने वाली चुनौतियों को जब गांधीजी ने भारतीयों के समक्ष प्रस्तुत किया तो उनकी चिंतनधारा से सभी रोमांचित हो उठे। औपनिवेषिक दासता से मुक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य तो था ही परंतु साथ में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का संदेश भी साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत होने लगा।

उद्देश्य- (Objectives)

इस शोध पत्र के माध्यम से कन्नड लेखकों के योगदान को देशभक्ति, साहित्यिक चेतना और राष्ट्रीय उत्साह के संदर्भ में विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे-

1. कन्नड साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के युग में उभरे गए लेखकों और उनकी रचनाओं का अध्ययन करना।
2. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कन्नड साहित्य में उभरी गई राष्ट्रीय भावनाओं और विचारधाराओं का पता लगाना।
3. कन्नड साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से प्रभावित हुए लेखकों के विचारों, भाषा के प्रयोग, और रचनात्मक योगदान का विश्लेषण करना।
4. कन्नड साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा, उत्साह, और देशभक्ति के संदेशों का विश्लेषण करना।
5. स्वतंत्रता संग्राम के स्वर के माध्यम से कन्नड साहित्यकारों के साहित्यिक परिदृश्य का प्रकाश डालना और उनके योगदान को सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ में स्थान देना।

पृष्ठभूमि (Background)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का युग, 1920 से 1947 तक एक महत्वपूर्ण और दृढ़ चरण था, जब देशभक्ति और स्वतंत्रता के आदर्श ने देशवासियों के मन में उभरकर एक राष्ट्रीय उत्साह को प्रेरित किया। यह युग, भारतीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का, आंदोलन का और जीवनशैली का युग था। कन्नड साहित्य में इस युग की विशेष महत्ता थी, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण साधन था जिसके माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की आंधी ने अपने स्वर को उठाया। कन्नड साहित्यकारों ने इस युग में अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं, आंदोलन के मुद्दों, और स्वतंत्रता के लिए समर्पण दिखाया। उनकी रचनाओं ने देशभक्ति और स्वतंत्रता की उत्कट भावना को उत्साहवर्धक और प्रेरणादायक बनाया।

आज हम जिसे कर्नाटक राज्य के रूप में पहचानते हैं स्वतंत्रता संग्राम के समय मैसूरु रियासत थी जो वोडेयार परिवार द्वारा शासित थी। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में मैसूरु रियासत से संबंधित दो मुख्य विशेषताएं सामने आती हैं:

1. मुख्यधारा के स्वतंत्रता संग्राम का इस क्षेत्र में प्रवेश होने में विलंब, जो प्राय: उस समय वोडेयारों के उदार शासन के कारण था, जो ब्रिटिश निरंकुशता के अधिकांश झटके को अवशोषित करने में मदद करता था।
2. हालांकि स्वतंत्रता संग्राम आधिकारिक तौर पर 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने के साथ समाप्त हो गया, मैसूरु का कर्नाटक बनने वाला आंदोलन कुछ और समय तक जारी रहा।

श्री एन. एस. रंगराजु, कला एवं संस्कृति भारतीय राष्ट्रीय न्यास के संयोजक, के अनुसार 75 साल पहले अंग्रेजों से आजादी पाने के लिए भारत में जिस राष्ट्रवादी और देशभक्ति के उत्साह की परिणति हुई, उसका मैसूर रियासत में एक अलग स्वर और कार्यकाल था। महाराजा के उदार शासन के कारण, तथा उनके प्रति विशेष श्रद्धा के कारण, देश के अन्य हिस्सों में बड़े पैमाने पर जो आंदोलन देखे गए थे, मैसूर में लंबे समय तक अनुपस्थित थे।

राज परिवार ने इस बात का ध्यान दिया था कि अंग्रेजी शासन के बावजूद रियासत का सतत सामाजिक-आर्थिक विकास होता रहे जिसके कारण प्रजा को किसी भी चीज की आवश्यकता महसूस नहीं होती थी। रेलवे का तेजी से विस्तार, सार्वजनिक मुद्दों पर चर्चा के लिए 1881 में प्रतिनिधि सभा की स्थापना, 1881 में मैसूर सिविल सेवा परीक्षा की शुरुआत, 1894 में आठ साल से कम उम्र की लड़कियों की शादी पर

प्रतिबंध, लड़कियों के लिए नि:शुल्क शिक्षा, 1905 में सहकारिता आंदोलन की स्थापना, मैसूर विश्वविद्यालय की स्थापना, 1919 में पिछड़े वर्ग समूहों के लिए नौकरियों में आरक्षण की शुरुआत, तेजी से औद्योगीकरण और कृषि के विस्तार के अलावा, शासकों द्वारा शुरू किए गए कुछ उपाय थे जिनके कारण विदेशी शासन की चोट से मैसूर सुरक्षित था।

हालाँकि, स्वतंत्रता की बड़ी माँग और राष्ट्रवाद की एक अंतर्धारा 1920 में नागपुर कांग्रेस और 1924 में बेलगाम कांग्रेस सम्मेलन के बाद कांग्रेस की व्यापक राजनीतिक गतिविधि के साथ व्याप्त होने लगी। महात्मा गांधी का प्रभाव राष्ट्रवादी गौरव को प्रोत्साहित करने में एक उत्प्रेरक था। 1927 और 1934 में महात्मा गांधी की मैसूर यात्रा ने जनता को उत्साहित करने में मदद की और जन आंदोलनों के लिए जमीन तैयार की। जब 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ और छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया तो सामाजिक सुधारों और राजनीतिक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रवाद का बीजवपन हुआ।

विश्लेषण (Analysis)

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कन्नड साहित्य के विकास के कई कारण थे। लगभग सभी साहित्यकार शिक्षित थे अत: सरकारी दफ़्तरों में, महाविद्यालय तथा विशविद्यालयों में उच्च पद पर आसीन थे, सभी बहुभाषी थे विशेषत: अंग्रेजी जानते थे अत: अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित थे। अपनी सांस्कृतिक समृद्धी के प्रति सजगता तथा अपने अस्तित्व के निर्माण हेतु एक भाषा की अवश्यकता - दो अन्य महत्वपूर्ण कारण थे जिन्होंने कन्नड साहित्य के विकास को दिशा एवं गति प्रदान की। यह एक विडंबना भी है कि जब स्वतंत्रता संग्राम में एक जुट होने के लिए क्रांति छिडी हुई थी तब कन्नड के चिंतक एवं साहित्यकार, अनेक रियासतों में फ़ैले कन्नड बोली जाने वाले स्थानों को जोडकर अपने लिए एक राजनीतिक अस्तित्व का निर्माण करने में लगे हुए थे। गांधीजी के संदेश के कुछ विपरीत ही थी ये परिस्थिति।

एक और महत्वपूर्ण विषय यह भी है कि स्वराज्य को मात्र एक राजनीतिक स्थिति के रूप में कम एवं सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता के रूप में अधिक देखा था इन साहित्यकारों ने। गांधी जी के इस संदेश के प्रति समर्पित अधिकांश साहित्यकारों ने मात्र दासता से मुक्ति को अपने साहित्य का विषय न बनाते हुए सामाजिक परिवर्तन को भी अपनी कहानियों, कविताओं, नाटकों, उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया। स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, राष्ट्र प्रेम के अलावा स्त्री सशक्तीकरण, अछूतोद्धार, जातिगत विषमताओं का तिरस्कार, ग्रामीण एवं ग्राम उद्योग का पुनर्निर्माण जैसे विषयों को लेकर साहित्य की रचना अधिक हुई थी।

जब तक भारत स्वतंत्रता संग्राम में पूर्णतः संलग्न हुआ, कन्नड साहित्य में नवोदय (नवजागरण) का काल था। नवोदय काल, 1900 से 1940 के दशक का है, आधुनिक कन्नड़ साहित्य की शुरुआत को संदर्भित करता है, जो बड़े पैमाने पर पाश्चात्य / अंग्रेजी शिक्षा, साहित्य और आधुनिकता के प्रभाव के कारण है। कई कन्नड़ विद्वानों ने इसे कन्नड़ साहित्य में पुनर्जागरण का काल कहा है। इन दशकों में कई लेखकों ने यूरोपीय भाषाओं के अनुवादों के माध्यम से आधुनिक कन्नड़ साहित्य के पोषण की जिम्मेदारी ली। कविता, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, लोक-कथाओं और आलोचना को इस समय नया दायरा, आकार और अर्थ मिला, जिसमें कविता का प्रमुख स्थान था। नवोदय में सक्रिय अधिकांश लेखक मध्यवर्गीय, अंग्रेजी-शिक्षित विद्वान थे जिसका प्रभाव उनके चिंतन एवं लेखन में स्पष्ट परिलक्षित है।

स्वतंत्रता संग्राम के इस शंखनाद से प्रेरित कन्नड के साहित्यकारों में **राष्ट्रकवि मंजेश्वर गोविंद पै** का नाम पहले लिया जाता है। सन 1883 में गौड सारस्वत ब्राह्मण परिवार में जन्में पै की मातृभाषा कोंकणी थी, वो लिखते थे कन्नड में लेकिन लगभग 25 भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के जानकार थे। स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित पै, गांधीवादी चिंतन को और अधिक समझने के लिए नवासरी गए जहां उनकी मुलाकात काका कालेलकर से हुई। उस समय उन्होंने अनेक निबंध तथा कविताएं लिखीं। प्राय: यह गांधीजी का ही प्रभाव था कि पै सर्वधर्म समभाव से प्रेरित थे। गौतम बुद्ध पर 'वैशाखी', ईसा मसीह पर 'गोलगोथा', 'श्री कृष्ण चरित' तथा 'प्रभास' श्री कृष्ण पर, 'गोम्मट जिनस्तुति' जैन आराध्य बाहुबली को समर्पित - इन सभी से यही आभास होता है। गांधी जी से प्रेरित हो इन्होंने 'देहली' नामक एक कविता लिखी।

पै जी की कविताएं एवं नाटकों से अपने समाज, नगरिकों की महत्वाकाक्षाएं तथा राष्ट्र में व्याप्त राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं के प्रति उनकी संवेदनशीलता का परिचय प्राप्त होता है। औपनिवेशिक परिस्थितियों से गुजरते हुए पै अपने अस्तित्व के प्रश्न को लेकर उत्सुक थे। भारत, कर्नाटक तथा तुलु समुदाय के बीच उनका अस्तित्व झूलता हुआ प्रतीत होता है जो उनकी रचनाओं 'भारत भाग्य विधाता', 'कन्नड भाषियों की मां','तुलु की मां' से स्पष्ट होता है। परंतु इन सब से बढकर गांधीवादी चिंतन का प्रभाव सबसे शक्तिशाली प्रतीत होता है विशेषत: अस्पृश्यता के विषय में। उनके काव्य संग्रह 'गिलिविंदे' में उनकी कविता 'होलेयनु* यारु'(होलेया कौन है?) (गो. पै. 17) स्वतंत्रता के इस पक्ष का अन्वेषण भी उन्होंने अपनी रचनाओं में किया।

इसी संग्रह में उनकी एक कविता है 'हिंदुस्तान हमारा' (गो. पै. 12) जिसमें उन्होंने भारत माता की प्राकृतिक समृद्धि एवं वैभव का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि उनकी एक ही प्रार्थना है कि जन्मों-जन्मों तक वो इसी मां की संतान बनकर

आएं। सन 1924 में महात्मा गांधी ने 21 दिनों का उपवास रखा था उसपर आधारित एक कविता लिखी है कविवर ने ’महात्मर उपवास’ (महात्मा का उपवास) (गो. पै. 17) जिसमें गांधीजी की महानता का बखान करते हुए उनके इस कृत्य को ’प्रेम का बीज’ कहते हैं जिसमें से ’भारत की भाग्यलता अंकुरित’ होगी। सन 1948 में प्रकाशित उनका नाटक ’चित्रभानु’ राष्ट्र के लिए बलिदान देने वाले एक स्वतंत्रता सेनानी तथा भारत छोडो आंदोलन पर आधारित था। इसी प्रकार गांधीजी के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट करने के लिए कवि ने 9 कविताएं रचित की हैं।

पु. ती. नरसिंहाचार की कविता है ’नेरलु’(परछाई) जिसमें उन्होंने एक गरुड के प्रतीक के माध्यम से गांधीजी के सशक्त व्यक्तित्व पर टिप्पणी की है। आसमान की ऊंचाइयों में उडते उस गरुड की परछाई पहाडों-घाटियों, पेड-पौधों, तालाबों - झीलों, सभी पर से, बिना किसी बाधा के, उडती रहती है। धरती पर भी उसकी गति उतनी ही प्रतीत होती है जितनी की आसमान में! इसे गांधी के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हुए कवि प्रश्न करते हैं -

कौन रोक सकता है उसका पथ?
थकान का पता नहीं,
सुस्ताने की आस नहीं :
वो घूमता है, बे रोक-टोक।
होता है आश्चर्य मुझे:
क्या गांधी भी हैं ऐसी ही एक परछाई?
क्या उस वीर की गति को
निश्चित किया है ईश्वर ने?

सन 1904 में जन्में **गोरुरु रमस्वामी अय्यंगार**, ने महात्मा गांधी से प्रभावित होकर असहयोग आंदेलन, भारत छोडो आंदोलन में सक्रिय सहभागिता दिखाई। 17 की उम्र में पढाई छोडकर आंदोलन में शामिल हो गए। उसी दौरान इनके पुत्र ने भी आजादी की लडाई में बलिदान दिया। खादी उद्योग बोर्ड में सेवारत अय्यंगार, गांधी से पूर्णत: प्रेरित थे। गांधी जी के आर्थिक चिंतन से प्रभावित होकर कुटीर उद्योग को प्रोत्साहित किया। इनकी कई कहानियों में ग्रामीण परिवेश में व्याप्त अंधविश्वास, जाति प्रथा के साथ-साथ ग्राम्य जीवन की अबोधता एवं सरलता का भी संकेत दिया।

सन 1918 में, कर्नाटक के उडुपि जिले में जन्मे **श्री गोपलकृष्ण अडिगा** जी आधुनिक कन्नड साहित्य के मूर्धन्य स्वर हैं। उनकी असंख्य रचनाओं में एक कविता है ’स्वतंत्रता का गीत’ जो स्वतंत्रता का त्योहार मनाता है जिसके अंत में कवि का उद्घोष है -

“जय जय हे भारत
न्याय सत्य धर्म कर्म मर्म सम्मत
जय जय हे भारत”

(गो. अ., १२२)

गोपाल्कृष्ण अडिग जी की कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर थोडा भिन्न है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुडे अनेक संदर्भों को अपनी रचनाओं का विषय बनाकर देश के प्रति अटूट प्रेम एवं श्रद्धा की अभिव्यक्ति को वाणी दी कविवर ने। वीर रस से ओत-प्रोत है कविताएं ’युद्ध की समाप्ति’, ’याद करो, याद करो वो दिन’ जो भारत छोडो आंदेलन पर आधारित है। १९४८ के काव्य संकलन ’चलो बनाएं हम’ में अनेक भावनाओं से प्रेरित कविताएं हैं जो राष्ट्रोत्थान के स्वर को प्रतिध्वनित करती हैं। विशेषत: इसी शीर्षक की प्रथम कविता ही स्वात्रंत्र्योत्तर भारत के नव-निर्माण का उद्घोष करते हैं उनके शब्द ’बनाएं हम एक नया राष्ट्र’। उसी श्रृंखला में वीरगति को प्राप्त स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है कविता ’वीरों की याद में’।

स्वतंत्रता संग्राम से जुडी कोई भी अभिव्यक्ति महात्मा गांधी जी के जिक्र के बिना अपूर्ण है। आडिग जी ने गांधीजी पर केंद्रित ३ महत्वपूर्ण रचनायें समर्पित की हैं - भारत के बापू गांधी (१९४८), गांधी (१९५२) तथा गांधी राज्य (१९८३) अडिग जी में यह सामाजिक चेतना एक भिन्न प्रकार से दृष्टव्य है। १९४८ के काव्य संकलन ’चलो बनाएं हम’ में भारत को ह्रासोन्मुखि बनाने वाले जाति प्रथा को उन्होंने ’रूढिराक्षस’ कहा है जिसका बहिष्कार करना अनिवार्य बताया है। उसी संकलन में एक अन्य कविता ’हम सब की एक ही जात" में स्पष्ट किया है कि –

“हम सब की जात एक
मत एक
कुल एक
हम सब हैं मनुष्य”

(गो. अ., पृ ६९)

गांधीवादी चिंतन का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। कवि के अनुसार यह आवश्यक है कि इंसान को अलग करने वाली, अमानवीय बनाने वाली, इस दीवार को तोडा जाये क्योंकि -

“नया जीवन, नई एकता, समरस
हम हैं नए भगवान”

(गो. अ., पृ ६९)

कवि का संदेश है कि इस हृदय मंदिर में सुंदर, उदार, चिंतन को स्थान दें। कबीर हो या बसवेश्वर, इनकी चिरवाणि को पुनर्जीवित करती है ये कविता। सामजिक दायित्व के प्रति सजगता का सशक्त प्रमाण है ऐसी उक्तियां। यदि ‘कट्टुवेवु नावु’ राजनीतिक स्वतंत्रता के आनंद को निरूपित करता है तो ’चलो बनाएं हम’ कविता व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लेकर अभिव्यक्त हुई है। ‘भावतरंग’(1946) तथा ’कट्टुवेवु नावु’ में भारत को औपनिवेषिक शक्ति से लडने के उत्साह को प्रदर्शित करता है जिसमें उन्होंने एक आदर्श भारत का चित्रित किया है।

स्वतंत्रता कालीन साहित्यिक रचनाकारों में एक अन्य हस्ताक्षर हैं **शिवराम कारंत**। इनके द्वारा रचित अनेक कृतियों में एक महत्वपूर्ण कृति है ’चोमन दुडि’ (शि. का. 2018)। सन

1933 में लोकार्पित यह उपन्यास एक ऐसे समय में हमारे बीच आया जब भारत में सामाजिक चेतना तथा संवेदना की क्रांति ने राजनीतिक स्वतंत्रता के स्वर की बराबरी की थी। विशेषत: इस सामाजिक क्रांति के केंद्र में थे किसान, हरिजन तथा स्त्री। हिंदी साहित्य में जो स्थान हम प्रेमचंद के 'गोदान' को देते हैं कन्नड में वो स्थान 'चोमन दुडि' को प्राप्त है। एक दलित किसान के जीवन के त्रासदी की कहानी है यह उपन्यास।

चोमा एक मेहनती, संघर्षशील किसान है और उसका सिर्फ़ एक ही सपना है कि वो अपनी ही जमीन की खेती-बाडी करे। बहुत बार अनुरोध करने पर भी जमींदार संकपय्या उसकी गुहार को अनसुनी करते रहते हैं। किसी काल्पनिक उधार को चुकाने के लिए उसे अपने दो बेटों को काम पर लगाना पडा। इस बीच एक और बेटा नदी में डूब जाता है जिसे बचाने के लिए कोई आगे नहीं जाता क्योंकि वो अस्पृश्य जाति का है। कारंत जी की यह कहानी एक सामान्य कहानी बन गई होती यदि उन्होंने उस समय की एक और ज्वलंत समस्या को हमारे सामने प्रस्तुत नहीं किया होता। यह समस्या थी धर्मांतरण की समस्या।

समाज में व्याप्त कमजोरियों का फ़ायदा उठाते हुए ईसाई प्रचारक इन गरीब, असहाय लोगों का फ़ायदा उठाते हुए उन्हें, इसाई धर्म को अपनाने का लालच देते थे। चोमा के साथ भी यही हुआ। लेकिन उसने इसके खिलाफ़ घोर प्रतिक्रिया दिखाई जो प्राय: अपने आप में कहानीकार का एक सशक्त संदेश था। चोमा के माध्यम से लेखक ने चित्रित किया कि गरीब होने से तात्पर्य यह नहीं कि वो स्वाभिमानी न हो, उसे अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा न हो। परंतु वहीं पर एक इसाई लडकी से विवाह करने के लिए उसका बेटा धर्म परिवर्तन को स्वीकार भी कर लेता है। कारंत ने इस प्रकार दोनों पहलू दिखाए हैं। यह सामाजिक संदेश गांधी जी के अभियान की मुखयधारा में प्रकट होने लगा था।

एक अन्य विचारोत्तेजक साहित्यकार थे **कय्यार किन्हन्ना रै**। सन 1915 में जन्मे रै स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, कवि तथा अध्यापक थे। बाल्यकाल में ही गांधी जी से अत्यधिक प्रभावित थे। देश के स्वतंत्रता संग्राम में सहभागिता तो निभाई साथ ही कासरगोड को कर्नाटक राज्य का हिस्सा बनाने में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। 'प्रतिभा पयस्विनि' नामक काव्य संकलन में कुछ रचनाएं हैं जो गांधी के प्रति श्रद्धा प्रकट करती है तथा कुछ राष्ट्र की परिस्थितियों का चित्रण। 'गांधी दर्शन' नामक कविता में गांधी जी की स्वभावगत एवं चिंतन की विशेषताओं का उल्लेख है जैसे निष्काम कर्मी, सत्याग्रह से प्रेरित सरल जीवन, विश्वबांधव्य का संदेश देने वाले वंदनीय, आत्मशक्ति के सहारे पूर्ण स्वराज की मांग करने वाले, राष्ट्र की स्थापना के लिए स्वतंत्रता की रण-भेरी की आवाज लगाते हुए सत्य को ही शक्ति के रूप में प्रयोग करने वाले -

"इन पूज्य चरणों के,
पुण्य स्पर्श से
चट्टान को तोडकर,
दुग्ध-गंगा बहा दें!

x-x-x

अंधकार से प्रकाश की ओर,
मृत्यु से अमरत्व की ओर,
इस संसार को
क्या मुक्त करेंगें गांधी?

(क. कि. रै., 25)

'गांधीजी के लिए' नामक कविता में पुन: उनकी विशेषताओं, शक्तियों का गुणगान करते हुए कवि ने कहा है कि सभी जीव उनकी शरण में आकर उन्हें बचाने की गुहार लगाते हैं। (क. कि. रै., 28)

सन 1899 में जन्में **श्री वी. सीतारामय्या** जी एक और कन्नड साहित्यकार हैं जो अपने समय की परिस्थितियों से बहुत प्रभावित थी अत: उसे अपनी कविताओं में भी उतारा। यद्यपि स्वतंत्रता संग्राम को केंद्र में रखकर लिखी कविताएं बहुत कम हैं। सन 1948 में प्रकाशित काव्य संकलन 'द्राक्षी दालिंबे' (अंगूर अनार) (वी. सी.,169) की अंतिम कविता 'भाग्यतारे' जिसमें राष्ट्र की स्वतंत्रता का स्वागत करते हुए कवि कहते हैं -

"चल रहे हैं, पैर स्त्री-पुरुष के
सब कुछ अन्देखा कर,
बिना किसी विश्राम के,
हमेशा, आगे, आगे !"

x-x-x

भारत के भाग्य तारा
चल रहे हैं आगे
आओ मेरे पीछे-पीछे
दिखा रहे हैं रास्ते!

(वी. सी., 216)

उसी कविता में कवि इस बात के प्रति भी इंगित करते हैं कि हिंदू, इसाई और मुसलमान एक साथ चल रहे हैं, एक मन, एक ध्वनि से आगे बढ रहे हैं। स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के लिए सभी ने अपनी भिन्नताओं को उपेक्षित कर दिया था।

औपनिवेशिक परिस्थिति के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया एवं विरोध प्रकट कर नागरिकों को सतर्क करने वाले कवियों में थे **मुदवीडु कृष्णराय एवं शांतकवि।** सन 1920 के विद्रोह में भाग लेते हुए इन कवियों ने अपनी कृतियों में अत्यंत सरल भाषा एवं शैली के माध्यम से सामाजिक चेतना को जागृत करने का प्रयास किया। विशेषत: अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के कारण भारत के किसानों, कुटीर उद्योगों तथा बुनकरों पर होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति सबको चेतावनी दी। (एच्चरिके : एच्चरिके) उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस क्रांति को 'अहिंसा' के बल पर ही लडेंगें। (लो. अ. 105)

जातीय भावना के कारण होने वाले सामाजिक असंतुलन के प्रति विशेष आग्रह दिखाते हुए लक्ष्मीनारयण पुणिंचित्ताय जी ने ’हरिजनसंधान’ नामक कविता में कहा - बच्चे की मैल को धोने वाली मां ही यदि बच्चे को दूर रखे तो क्या होगा? (लो. अ. 107)

गुलवाडी वेंकटराव, एक सारस्वत ब्राह्मण, जिन्होंने 19वीं शताब्दी के अंतिम 19 वर्षों तक पुलिस विभाग में काम किया, अपने समुदाय में बाल विधवाओं की दुखद दुर्दशा को सुधारने के लिए आंदोलन किए। ’इंदिराबाई’ संभवत: कन्नड का पहला सामाजिक उपन्यास है, जहां मुख्य पात्र, एक बाल विधवा, समाज के हुक्मरानों के खिलाफ शादी कर लेती है। इसकी प्रमुख चिंता जाति समाज के खिलाफ एक मूक विद्रोह और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को महत्व दिया। (लो. अ. 107)

इनके अलावा **द.रा.बेंद्रे** की कविता ’इदो होरटेवु बिडुगडेगागि’(चले हम मुक्ति की ओर); **पंजे मंगेशराव** की ’एद्देलु एद्देलु’(उठो उठो); **बेटगेरि कृशणशर्मा** की ’भारतीयरु नावु’ (हम भारतीय हैं) कुछ अन्य कविताएं हैं जो, उस समय में, राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रतिध्वनित करती हैं। (लो. अ., 107)

एक अन्य विशेष बात यह भी है कि कन्नड भाषी अनेक विद्वानों ने अंग्रेजी में भी लेखनी चलाई । उदा. राजा राव, का उपन्यास ’कांतापुरा’(1938) आर. के. नारायण जिनके अनेक उपन्यासों में ’स्वामी एवं उसके मित्र’ नामक उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक पहलुओं का चित्रण करता है तथा मालगुडि नामक काल्पनिक ग्राम पर आधारित है । इसमें सबसे महत्वपूर्ण है गांधी जी का प्रभाव।

प्राय: चिंतन करने वाला विषय यह है कि इतने अधिक सशक्त साहित्यकार होने के बावजूद कन्नड में स्वतंत्रता संग्राम के किसी भी पहलू को लेकर बहुत कम लिखा गया। इस आलेख के प्रारंभ में इसके लिए कुछ कारण दिए गए हैं। स्वतंत्रता के पश्चात कुछ साहित्य अवश्य लिखा गया परंतु वो अधिकांशत: गांधी जी पर आधारित थे। अपने अस्तित्व के निर्माण से चिंतित कवि राज्य-निर्माण एवं भाषा को लेकर अधिक व्यस्त था। अत: यहां-वहां पर अभिव्यक्त फ़ुटकर रचनाओं के अलावा कोई सतत एवं निरंतर रचनाएं नहीं मिलतीं। यह अवश्य है कि जाति प्रथा को लेकर मुक्त हृदय से कवि ने प्रतिरोध के स्वर उठाए थे । यह और भी अधिक विशेष इसलिए है कि उस समय के अधिकांश कवि ब्राह्मण कुलोत्पन्न थे। स्वतंत्रता संग्राम का यह मात्र एक अंश था, उसका मुख्य विषय नहीं। राष्ट्रवाद को एक दार्शनिक तत्व के रूप में अपनाते हुए कन्नड की नवोदय (पुनर्जागरण) कविता को अनिवार्य रूप से जातिवाद और भ्रमपूर्ण परंपराओं के बारे में लिखना पड़ा जो गांधी जी द्वारा प्रतिपादित स्वराज्य की परिकल्पना का महत्तर उद्देश्य था।

निष्कर्ष (Conclusion) -

इस शोध आलेख के माध्यम से, हमने कन्नड साहित्य के विभिन्न आयामों पर विचार किया है, हमने देखा है कि देशभक्ति, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर लेखकों द्वारा गहरा प्रभावशाली साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ की गईं हैं। ये रचनाएं कन्नड साहित्य में राष्ट्रीय और साहित्यिक चेतना को प्रभावित करने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मानवीय उत्साह को भी उत्पन्न करती रही हैं। इस शोध आलेख के अंतर्गत हमने स्वतंत्रता संग्राम के युग में कन्नड साहित्य की महत्त्वपूर्णता को जानने का प्रयास किया है। साथ ही इस अनुशीलन के माध्यम से हमने देखा है कि कन्नड साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के स्वर न केवल राजनीतिक विद्रोह के लिए उभरे, बल्कि भाषा, साहित्य और साहित्यिक स्वतंत्रता के लिए भी महत्वपूर्ण माध्यम बने रहे हैं। इस आलेख ने कन्नड साहित्य के स्वतंत्रता संग्राम के स्वर को उद्घाटित किया

संदर्भ (References) -

Adige, M. Gopalakrishna (2012) Kattuvevu Naavu [We will build]. Bangalore. Sapna Book House Publications.

Adig, M. Gopalkrishna (2015). Samagra Kavya Purna Samput [Complete Poetry Full Vol]. Bangalore. Sapna Book House.

Agasankatte, Lokesh (2003). Kannada Kavya : Samaj Sanskriti [Kannada Poetry: Social Culture]. Chitradurga. Alok Prakashan.

Karant, Shivaram (2018). Choman Dudi [Chomana's work]. Bangalore. Sapna Book House Publications,

Kavanaglu (1988). P.T.N. Samagra [P.T.N. Overall] Bangalore. Lipi Prakashan.

Pai, Govinda (1991). Gilivindu : Kavya Sankalan [Giliwindu : A collection of poems]. Mysore. Srimati Seshamma Chidambaram, Kavyalaya Publications.

Rai, Kayyar Kinhann (1992). Srimukh : Kavya Sankalan [Srimukh : a collection of poems]. Kasargod. Kavitha Kutir

*होलेया अनुसूचित जाति का नाम है जो विशेषत: किसान होते हैं।